प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा

(प्राकृत शिक्षा)

भाग - 4

लेखक
मुनि प्रणम्यसागर

'जयउ जिणसासणं'

पागदभासामूला दिस्सदि ववहार भारदे देसे।
पादेसिगभासासुं अज्जवि सद्दा सुणिज्जंति।।1।।

माआए जा भासा सव्वेसिं हियए देदि सुहं।
णेहो सहजे जायदि परोप्परं भासमाणाणं।।2।।

भासा सद्दवियारो भासाए सव्वभावसब्भावो।
भासाए संकारो संकदिविण्णाणसुहसमायारो।।3।।

–धम्मकहा

प्राकृत भाषा मूल है। भारतदेश में इसका व्यवहार दिखाई देता है।
प्रादेशिक भाषाओं में आज भी प्राकृत के शब्द सुने जाते हैं।।1।।

माता की जो भाषा है वह सभी के हृदय में सुख देती है।
माँ की भाषा में परस्पर बोलने वालों में स्नेह सहज उत्पन्न होता है।।2।।

भाषा शब्द का विकार है, भाषा से ही सभी भावों का सद्भाव होता है, भाषा से ही संस्कार होता है, भाषा से ही संस्कृति, विज्ञान और सुख का आचरण होता है।



प्राकृत हमारी दादी माँ है, संस्कृत हमारा पितामह है,
हिन्दी हमारी माँ है, अपभ्रंश हमारा पिता है,
अंग्रेजी हमारी पत्नी है।

मुनि प्रणम्यसागर



प्राकृत पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा

(प्राकृत शिक्षा)

भाग-4

लेखक

मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज



जय जिणिंद

प्रकाशक

आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति

109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन (476010)

कृति
पाइय सिक्खा - भाग 4

आशीर्वाद
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

कृतिकार
मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज

संयोजन
डॉ. अजेश जैन शास्त्री, रेवाड़ी

सहयोग
श्री ऋषभ जैन शास्त्री, रेवाड़ी

आवृति : **1000**

मूल्य : **30/-**

प्राप्ति स्थान :
डॉ. अजेश जैन शास्त्री, रेवाड़ी - 9416426659, 9784601548
शैलेन्द्र शाह, उज्जैन - 09425092483, 09406881001
आर्हत विद्या प्रकाशन, गोटेगांव - 09425837476

पुण्यार्जक :
श्री रविन्द्रकुमार जैन, श्री हेमराज जैन, श्री विनय जैन
गांधी नगर, रेवाड़ी-123401

मुद्रक
अजय प्रैस, काठ मण्डी, रेवाड़ी-123401
(हरियाणा) - 9416150911

पाइय सिक्खा

भाग 4

विषयानुक्रमणिका

आत्मकथ्य/पाथेय

जैन परम्परानुसार अवसर्पिणी काल के इस पंचम युग में जहाँ एक ओर भौतिक एवं वैज्ञानिक सम्पन्नता का दिग्दर्शन हो रहा है, वहीं अशान्त एवं आक्रान्त मानव समाज कर्त्तव्यों एवं मूल्यों से विमुख होता जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज में मूल्यों की स्थापना हो, वैयक्तिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर मानवता का विकास हो, अशांत समाज के लिए आर्षपुरुषों की वाणी का सदुपयोग करने का अवसर मिले। आज जिन-शासन में महावीर की देशना फलित हो रही है। उनकी वाणी आगम के रूप में विद्यमान है। हम सभी उस आगम रूप जिनवाणी का स्वाध्याय करके आत्मकल्याण कर सकें, यही मंगल कामना है।

आज महावीर की देशना जिन आगम ग्रन्थों के रूप में प्राप्त हो रही है उनका स्वाध्याय एवं अध्ययन भाषा की दुरूहता के कारण सम्भव नहीं है। प्राकृत भाषा में रचित इन आगमों के अध्ययन एवं स्वाध्याय के लिए प्राकृत भाषा की प्रारम्भिक जानकारी आवश्यक है। इसी उद्देश्य को लेकर **प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम** का निर्माण किया गया है जो **प्राकृत शिक्षा के चार भागों** में पाठकों के हाथ में है। जिसके माध्यम से जनसामान्य एवं जिन-उपासकों के अन्दर भाषा की जानकारी के साथ-साथ स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ सकेगी। इसी उद्देश्य को लेकर सामाजिक स्तर पर, पारिवारिक स्तर पर और वैयक्तिक स्तर पर स्वाध्याय की रुचि जागृति की जा सके, जगह-जगह **प्राकृत विद्या पाठशाला** स्थापित की जा रही हैं। इस पाठशाला के निमित्त से प्राकृत भाषा की जानकारी के लिए रचित इस कृति में क्रमशः प्राकृत के संज्ञा-सर्वनाम शब्दों के विभक्ति रूप, क्रियापदों के धातुरूपों और प्राकृत के सामान्य नियमों की जानकारी तथा प्राकृत अभ्यास रचना के प्रयोग 'प्राकृत शिक्षा' में दिये गये हैं।

मंगल-कामना है कि समाज के सभी धर्मानुरागी श्रावक-श्राविकाएं इस पाठशाला में आकर इसे समृद्ध करें और अपने आपको स्वाध्याय की प्रवृत्ति से जोड़े रखें।

अस्तु मंगलभावना सहित.......

वर्षायोग - 2017
रेवाड़ी (हरियाणा)

- मुनि प्रणम्य सागर

प्राकृत भाषा का ऐतिहासिक परिचय

– मुनि प्रणम्यसागर

- ❖ भारत के प्राचीन ग्रन्थ प्राकृत भाषा में निबद्ध हैं। श्रमण परम्परा के पोषक वैदिक युगीन व्रात्य आदि प्राचीन प्राकृत का व्यवहार करते थे।
- ❖ वेद छान्दस् में लिखे गये हैं। उस समय जन सामान्य के बीच व्यवहार की भाषा का नाम प्राकृत कहा जाता था।
- ❖ श्रमण परम्परा के महापुरुष भगवान् महावीर ने भी अपने उपदेशों की भाषा जन–बोली प्राकृत को बनाया।
- ❖ गणधर और आचार्यों की परम्परा द्वारा स्मरण के आधार पर महावीर के उपदेशों को द्वादशांग श्रुत के रूप में प्राकृत में सुरक्षित रखा गया।
- ❖ उसी श्रुतांश को दक्षिण भारत के दिगम्बर जैनाचार्यों ने स्वतन्त्र ग्रन्थों की रचना कर और उसे ईसा की प्रथम शताब्दी में लिपिबद्ध कर सुरक्षित किया। दिगम्बर परम्परा के अनुसार ई.पू. प्रथम शताब्दी में गुणधराचार्य ने कसायपाहुड नामक ग्रन्थ की रचना शौरसैनी प्राकृत में 180 गाथा सूत्रों में की।
- ❖ आचार्य धरसेन की प्रेरणा से आचार्य पुष्पदन्त एवं मुनि श्री भूतबलि (ईसा के 73 से 87 वर्ष के लगभग) ने षट्खण्डागम नामक ग्रन्थ की शौरसैनी प्राकृत में रचना की और ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुत पंचमी) को उसकी लिखित ताड़पत्रीय प्रति की संघ ने पूजा की। ग्रन्थलेखन का यह क्रम निरन्तर चलता रहा।
- ❖ यही शौरसैनी प्राकृत तब दक्षिण से उत्तर और पूर्व से पश्चिम तक सम्पर्क भाषा प्राकृत के रूप में प्रसिद्ध थी।
- ❖ श्वेताम्बर परम्परा में आगम साहित्य में अर्धमागधी प्राकृत का तथा परवर्ती धार्मिक कथा–ग्रन्थों और व्याख्या साहित्य के लिए महाराष्ट्री प्राकृत का प्रयोग किया गया है।
- ❖ दिगम्बर परम्परा ने धार्मिक कथा और काव्य ग्रन्थों के लिए प्राकृत से विकसित अपभ्रंश भाषा का प्रयोग किया।
- ❖ इस प्रकार भगवान् महावीर के बाद लगभग दो हजार वर्षों तक जैन ग्रन्थों के साथ शौरसैनी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री आदि प्राकृतों का सम्बन्ध बना रहा है। प्राकृत जैन परम्परा की मूल भाषा है।
- ❖ जैनाचार्यों ने प्राकृत भाषा के साथ भारत की अन्य प्रायः सभी भाषाओं में अपना साहित्य लिखा है।
- ❖ प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति करते समय **'प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्'** अथवा **'प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम्'** अर्थ को स्वीकार करना चाहिये। जन सामान्य की स्वाभाविक भाषा प्राकृत है।
- ❖ प्राचीन विद्वान् नमिसाधु के अनुसार प्राकृत शब्द का अर्थ है–व्याकरण आदि संस्कारों से रहित लोगों का स्वाभाविक वचन–व्यापार। उससे उत्पन्न अथवा वही वचन–व्यापार प्राकृत है।
- ❖ प्राक्+कृत पद से प्राकृत शब्द बना है, जिसका अर्थ है पहिले किया गया। जैन धर्म के द्वादशांग ग्रन्थ पहिले किये गये हैं। अतः उनकी भाषा प्राकृत है, जो बालक, महिला आदि सभी को सुबोध है।

❖ प्राकृत के देश–भेद एवं संस्कारित होने के अवान्तर विभेद हुए हैं। यथा–शौरसेनी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री, मागधी, अपभ्रंश आदि।

❖ आठवीं शताब्दी के कवि वाक्पतिराज ने कहा है कि–सभी भाषाएँ इसी (जनबोली प्राकृत) से निकलती हैं और इसी को प्राप्त होती हैं। जैसे जल बादल के रूप में समुद्र से निकलता है और समुद्र में ही नदियों के रूप में आ जाता है। यथा–

सयलाओइ मंव ाया बिसन्तिए त्तोय ण ोन्तिव ायाओ।
एन्तिस मुद्दं च्चियण ोन्तिस ायराओ च्चियज लाइं।।

❖ महावीर और बुद्ध ने जनता के सांस्कृतिक उत्थान के लिए प्राकृत भाषा का आश्रय लिया, जिसके परिणाम स्वरूप दार्शनिक, आध्यात्मिक, सामाजिक आदि विविधताओं से परिपूर्ण आगमिक एवं त्रिपिटक साहित्य के निर्माण की प्रेरणा मिली।

❖ महापुरुषों ने प्राकृत भाषा के माध्यम से तत्कालीन समाज के विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्ति की ध्वजा लहरायी थी। प्राचीन भारत में प्राकृत मातृभाषा के रूप में दूर–दूर के विशाल जन समुदाय को आकर्षित करती थी।

❖ विद्वानों ने कहा है कि जिस प्रकार वैदिक भाषा को आर्य संस्कृति की भाषा होने का गौरव प्राप्त है, उसी प्रकार प्राकृत भाषा को **आगम भाषा/आर्य भाषा** होने की प्रतिष्ठा प्राप्त है।

❖ सम्राट अशोक के समय में प्राकृत जन–भाषा के रूप में इतनी प्रतिष्ठित थी कि उसे **राज्यभाषा** होने का गौरव भी प्राप्त हुआ है। ई.पू. 300 से लेकर 400 ईस्वी तक इन सात सौ वर्षों में लगभग दो हजार अभिलेख प्राकृत में लिखे गये हैं।

❖ खारबेल द्वारा हाथी गुम्फा में प्राकृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख में अपने देश भारत वर्ष का नाम **'भरध-वस'** सर्वप्रथम प्राचीनतम उल्लेख के रूप में मिलता है।

❖ वैदिक युग में प्राकृत भाषा लोकभाषा थी। उसमें रूपों की बहुलता एवं सरलीकरण की प्रवृत्ति थी। महावीर युग तक आते–आते प्राकृत ने अपने को इतना समृद्ध और सहज किया कि वह अध्यात्म और सदाचार की भाषा बन सकी।

❖ साहित्य भाषा के रूप में महाकवि हाल ने प्रथम सदी में प्राकृत भाषा के कवियों की गाथाओं का गाथाकोश (गाथासप्तशती) तैयार किया, जो ग्रामीण जीवन और सौन्दर्य–चेतना की प्रतिनिधि ग्रन्थ है।

❖ प्राकृत भाषा के इस जनाकर्षण के कारण कालिदास आदि महाकवियों ने अपने नाटक ग्रन्थों में प्राकृत भाषा बोलने वाले पात्रों को प्रमुख स्थान दिया। इससे स्पष्ट है कि समाज में अधिकांश लोग दैनिक जीवन में प्राकृत भाषा का प्रयोग करते थे।

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलं की ऋषिकन्या शकुन्तला, नाटककार भास की राजकुमारी वासवदत्ता, शूद्रक की नगरवधू वसन्तसेना तथा प्रायः सभी नाटकों में राजा के मित्र, कर्मचारी आदि पात्र प्राकृत भाषा का प्रयोग करते देखे जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्राकृत जनसमुदाय की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी।

❖ नाटकों में स्त्रियाँ शौरसैनी प्राकृत में ही बात करती हैं। महाकवि शूद्रककृत 'मृच्छकटिकम्' नाटक में विदूषक कहता है– दो वस्तुयें हास्य उत्पन्न करती हैं। प्रथम वस्तु–स्त्री के द्वारा संस्कृत भाषा का प्रयोग तथा दूसरी वस्तु–पुरुष द्वारा धीमें स्वर में गायन।

- ❖ प्राकृत में जो आगम ग्रन्थ, व्याख्या साहित्य, कथा एवं चरितग्रन्थ आदि लिखे गये है उनमें काव्यात्मक सौन्दर्य और मधुर रसात्मकता का समावेश है।
- ❖ काव्य की प्रायः सभी विधाओं–महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, चरित, कथा आदि को प्राकृत भाषा ने समृद्ध किया है।
- ❖ अनेक प्राकृत रचनाएँ अजैन कवियों/विद्वानों द्वारा लिखी गयी हैं।
- ❖ प्राकृत एवं अपभ्रंश की लाखों पाण्डुलिपियाँ देश के ग्रन्थभण्डारों में सुरक्षित हैं, जो देश की धरोहर हैं।
- ❖ प्राकृत भाषा की मधुरता और काव्यात्मकता का प्रभाव है कि भारतीय काव्यशास्त्रियों ने काव्य के अपने लक्षण–ग्रन्थों में प्राकृत की सैंकड़ों गाथाओं के उद्धरण दिये हैं। देश के अनेक सुभाषितों को उन्होंने इस बहाने सुरक्षित किया है।
- ❖ डॉ. पी. डी. गुणे ने स्वीकार किया है कि प्राकृतों का अस्तित्व वैदिक बोलियों के साथ–साथ विद्यमान था। उन्हीं से परावर्ती साहित्यिक भाषाओं का विकास हुआ है।
- ❖ डॉ. हरदेव बाहरी ने अपनी पुस्तक– **'प्राकृत भाषा और उसका साहित्य'** में कहा है कि वेद कालीन प्राकृतों से संस्कृत और विभिन्न प्राकृतों का विकास हुआ है।
- ❖ डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तृतीय युगीन प्राकृत अपभ्रंश को प्राचीन हिन्दी कहा है। यह अपभ्रंश आधुनिक भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी है।
- ❖ 'हिन्दी' जिस भाषा के विशिष्ट दैशिक और कालिक रूप का नाम है, भारत में इसका प्राचीनतम रूप प्राकृत है।
- ❖ आधुनिक युग में प्राकृत भाषाओं का व्याकरण लिखने वाले जर्मन विद्वान् हैं– डॉ. पिशेल, इससे जर्मनी में प्राकृत अध्ययन खूब विकसित हुआ।
- ❖ प्राकृत कवि के ये उद्‌गार प्रेरणादायक हैं कि–"प्राकृत काव्य के लिये नमस्कार है और उनके लिए भी जिनके द्वारा प्राकृत काव्य रचा गया है। उनको भी हम नमस्कार करते हैं, जो प्राकृत काव्य को पढ़कर उसे हृदयंगम करते हैं"। यथा–

पाइयकव्वस्सन मो,प इयकव्वंच िनम्मियंज`ण।
ताहं चियप णमामो,प ढिऊणय ज`ि वय ाणन्ति।।

- ❖ आचार्य राजशेखर ने कर्पूरमंजरी को शौरसैनी प्राकृत में लिखा और उसमें कहा है कि संस्कृत के काव्य पुरुषों की तरह कठोर एवं प्राकृत के काव्य महिलाओं की तरह कोमल भाषा वाले हैं।
- ❖ प्राकृत भाषा का अध्ययन न केवल भारत देश में अपितु विदेशों में भी हो रहा है। आज भी **SOAS लंदन यूनिवर्सिटी** में प्राकृत भाषा का अध्ययन कराया जाता है।
- ❖ ऐसी भारतीय भाषाओं की आधारभूत जन भाषा प्राकृत एवं उसके साहित्य के संरक्षण, शिक्षण, शोध एवं प्रचार–प्रसार के लिए प्रत्येक देशवासी, संस्था, सरकार, नेता, समाजसेवी, शिक्षक को सक्रिय सहयोग एवं संबल प्रदान करना चाहिये।

पाठ-1

पंच महागुरु भत्ति

मणुय णाइंद-सुर-धरिय-छत्तत्तया, पंचकल्लाण-सोक्खावली-पत्तया।
दंसणं णाण झाणं अणंतं बलं, ते जिणा दिंतु अम्हं वरं मंगलं।।1।।

अन्वयार्थः

मणुयणाइंद	–	मनुज, नागेन्द्र और
सुरधरिय	–	सुरेन्द्र द्वारा जिनको
छत्तत्तया	–	छत्रत्रय लगाये गये हैं
पंचकल्लाण	–	पंचकल्याणकों में
सोक्खावली	–	सुख संतति
पत्तया	–	प्राप्त हैं
ते जिणा	–	वे जिन
दंसणं णाण	–	अनंत दर्शन, ज्ञान
झाणं अणंतं बलं	–	ध्यान और बल
वरं मंगलं	–	श्रेष्ठ मंगल
अम्हं	–	हमारे लिए
दिंतु	–	देवें

भावार्थः-नरेन्द्र, नागेन्द्र और सुरेन्द्र जिन पर तीन छत्र धारण लगाते हैं तथा जो पंचकल्याणकों के सुख समूह को प्राप्त हैं वे जिनेन्द्र हमारे लिए उत्कृष्ट मंगलस्वरूप अनंतदर्शन, अनंतज्ञान, अनंतबल और उत्कृष्ट ध्यान को देवें।

जेहिं झाणग्गि-बाणेहिं अइ-दड्ढयं, जम्म-जर-मरण-णयरत्तयं दड्ढयं,
जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं, ते महं दिंतु सिद्धा वरं णाणयं।।2।।

अन्वयार्थः

जेहिं	–	जिन्होंने
झाणग्गि बाणेहिं	–	ध्यान रूपी अग्नि वाणें द्वारा
अइदड्ढयं	–	अत्यंत दृढ़
जम्म जर मरण	–	जन्म जरा और मरण रूपी

णयरत्तयं	–	तीनों नगरों को
दड्ढयं	–	जलाया
जेहिं	–	जिन्होंने
सासयं सिवं	–	शाश्वत् शिव
ठाणयं पत्तं	–	स्थान को प्राप्त किया
ते सिद्धा	–	वे सिद्ध भगवान
महं	–	मुझे
वरं णाणयं	–	उत्तम ज्ञान
दिंतु	–	देवें।

भावार्थः-जिन्होंने ध्यान रूपी अग्नि वाणों से सुदृढ़ जन्म, जरा और मरण रूपी तीन नगरों को जला डाला तथा जिन्होंने शाश्वत मोक्षस्थान प्राप्त कर लिया, वे सिद्ध भगवान मुझे उत्तम ज्ञान प्रदान करें।

पंच-हाचार-पंचग्गि-संसाहया, बारसंगाइ-सुअ-जलहि-अवगाहयां।
मोक्ख-लच्छी महंती महं ते सया, सूरिणो दिंतु मोक्खंगयासंगया॥3॥

अन्वयार्थः

पंचहाचार	–	जो पाँच प्रकार के आचार रूपी
पंचग्गि संसाहया	–	पंचाग्नियों के सम्यक् साधक
वारसंगाइसुअ जलहि अवगाहया	–	द्वादशांग आदि श्रुत रूप सागर में अवगाहन करने वाले
मोक्खं गयासंगया	–	आशाओं से रहित मोक्ष को प्राप्त हुए हैं
ते सूरिणो	–	वे आचार्य
महं सया	–	मुझे सदा
महंती मोक्खलच्छी	–	महान मोक्षलक्ष्मी
दिंतु	–	देवें

भावार्थः- जो पाँच प्रकार के आचार रूप पाँच अग्नियों का साधन करते हैं, द्वादशांगरूपी समुद्र में अवगाहन करते हैं तथा जो आशाओं से रहित मोक्ष को प्राप्त हुए हैं, ऐसे आचार्य परमेष्ठी मेरे लिए सदा महती मोक्ष रूपी लक्ष्मी को देवें।

घोर-संसार-भीमाडवी-काणणे, तिक्ख-वियरालणह-पाव-पंचाणणे।
णट्ठ-मग्गाण जीवाण पहदेसिया, वंदिमो ते उवज्झाय अम्हे सया।।4।।

अन्वयार्थः

तिक्खवियराल णह पाव पंचाणणे	–	तीक्ष्ण विकराल नाखून वाले पाप रूपी सिंह व्याप्त हैं
घोर संसार भीमाडवी काणणे	–	घोर संसार रूपी भयंकर अटवी, वन में
णट्ठमग्गाण	–	मार्गभ्रष्ट
जीवाण	–	जीवों को
पहदेसिया	–	पथदर्शक हैं
ते उवज्झाय	–	उन उपाध्याय की
अम्हे सया	–	हम सदा
वंदिमो	–	वंदन करते हैं

भावार्थः-जिसमें तीक्ष्ण विकराल नख और पैर वाले पाप रूपी सिंह विद्यमान हैं, ऐसे भयंकर संसार रूपी बीहड़ वन में मार्ग भूले हुए जीवों को जो मार्ग दिखाते हैं, उन उपाध्याय परमेष्ठी की हम सदा वंदना करते हैं।

उग्ग तव चरण करणेहिं झीणं गया, धम्म वर झाण सुक्केक्क झाणं गया।
णिब्भरं तवसिरीएसमालिंगया, साहवो ते महं मोक्खपहमग्गया।।5।।

अन्वयार्थः

उग्गतवचरणकरणेहिं	–	उग्र तपश्चरण करने से
झीणंगया	–	क्षीणता को प्राप्त हो गया है
धम्मवरझाणसुक्केक्क झाणंगया	–	उत्तम धर्मध्यान प्रधान शुक्ल ध्यान को प्राप्त
तव सिरीए	–	तप रूपी लक्ष्मी से
णिब्भरं समालिंगया	–	भारी आलिंगित हैं
ते साहवो	–	वे साधुगण

महं	–	मेरे लिए
मोक्खपहमग्गया	–	मोक्षपथ के मार्गदर्शक हों

भावार्थः-उग्र तपश्चरण करने से जिनका शरीर क्षीण हो गया है। जो उत्तम धर्मध्यान और शुक्लध्यान को प्राप्त हैं तथा तप रूपी लक्ष्मी के द्वारा जो अत्यंत आलिंगित हैं; वे साधु-परमेष्ठी मेरे मोक्षमार्ग के दर्शक हों।

एण थोत्तेण जो पंचगुरु वंदए, गुरुय-संसार-घण-वेल्लि सो छिंदए।
लहइ सो सिद्धसोक्खाइं बहुमाणणं, कुणइ कम्मिंधणं पुंजपज्जालणं।।6।।

अन्वयार्थः

एण थोत्तेण	–	इस स्तोत्र से
जो	–	जो
पंचगुरु वंदए	–	पंचगुरुओं की वंदना करता है
सो	–	वह
गुरुय संसार घण वेल्लि	–	गुरुक (भारी, अत्यंत) संसार रूपी सघन वेल को
छिंदए	–	काट डालता है
सो	–	वह
वरमाणणं	–	उत्तम जनों के द्वारा मान्य
सिद्धिसोक्खाइं	–	मोक्ष के सुखों को
लहइ	–	प्राप्त होता है
कम्मिंधणं	–	कर्मरूपी ईंधन
पुंज पज्जालणं	–	समूह को प्रज्ज्वलित
कुणइ	–	करता है

भावार्थः- जो इस स्तोत्र के द्वारा पंचगुरुओं/पंच परमेष्ठियों की वंदना करता है, वह अनंत संसार रूपी सघन बेल को काट डालता है, उत्तम जनों के द्वारा मान्य मोक्ष को प्राप्त होता है तथा कर्म रूपी ईंधन के समूह को जला डालता है।

अरुहा सिद्धा-इरिया उवज्झाया साहु पंचपरमेट्ठी।
एयाण-णमोयारा भवे भवे मम सुहं दिंतु॥7॥

अन्वयार्थः

अरुहा	–	अरहंत
सिद्धाइरिया	–	सिद्ध, आचार्य
उवज्झाया	–	उपाध्याय
साहु	–	साधु
पंच परमेट्ठी	–	पाँच परमेष्ठी हैं
एयाण	–	इनके
णमोयारा	–	नमस्कार
मम	–	मुझे
भवे भवे	–	भव-भव में
सुहं	–	सुख
दिंतु	–	देवें

भावार्थः- अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये पाँच परमेष्ठी हैं। इनके लिए किये गये नमस्कार मुझे भव-भव में सुख देवें।

अंचलिका-इच्छामि भंते! पंचमहागुरु-भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अट्ठ-महा-पाडिहेर-संजुत्ताणं अरिहंताणं अट्ठ-गुण-संपण्णाणं उड्ढ-लोय-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं सिद्धाणं अट्ठ-पवयण-मउ-संजुत्ताणं आयरियाणं आयारादि-सुद-णाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं ति-रयण-गुण-पालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिण-गुण-संपत्ति होदु मज्झं।

भावार्थः- हे भगवन्! मैंने पंचमहागुरु भक्ति सम्बन्धी कायोत्सर्ग किया है। उसकी आलोचना करता हूँ। आठ महाप्रातिहार्यों से सहित अरहन्त, आठ गुणों से सम्पन्न तथा ऊर्ध्वलोक के मस्तक पर स्थित सिद्ध, आठ प्रवचनमातृका से संयुक्त आचार्य, आचारांग आदि श्रुतज्ञान का उपदेश करने वाले उपाध्याय और रत्नत्रयरूपी गुणों के पालन करने में तत्पर सर्व साधुओं की मैं नित्यकाल अर्चा करता हूँ, पूजा करता हूँ, वन्दना करता हूँ, नमस्कार करता हूँ। इसके फलस्वरूप मेरे दुःखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो, सुगति गमन हो, समाधिमरण हो और जिनेन्द्र भगवान के गुणों की संप्राप्ति हो।

पाठ-2

सिद्ध-सुद-आइरिय भत्ति

सिद्धभत्ति (सिद्धभक्ति)

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलहु-मव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥1॥
तव-सिद्धे णय-सिद्धे संजम-सिद्धे चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि॥2॥

क्षायिकसम्यक्त्व, अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतवीर्य, सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व और अव्याबाध सुख-ये आठ गुण सिद्धों के होते हैं। तप-सिद्ध, नय-सिद्ध, चरित्र-सिद्ध, ज्ञान-सिद्ध, दर्शन-सिद्ध, ऐसे सभी सिद्धों को सिर झुकाकर मैं नमस्कार करता हूँ॥1-2॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्म-दंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं अट्ठ-विह-कम्म-विप्प-मुक्काणं अट्ठ-गुण-संपण्णाणं उड्ढलोए-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं तव-सिद्धाणं णय-सिद्धाणं संजम-सिद्धाणं चरित्त-सिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाणकालत्तय-सिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहि-लाहो सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं।

हे भगवन्! सिद्ध भक्ति करने के पश्चात् जो मैंने कायोत्सर्ग किया है उसमें लगे हुए दोषों की आलोचना करने की इच्छा करता हूँ। जो सिद्ध भगवान सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र सहित हैं, आठों कर्मों से रहित हैं, सम्यक्त्वादि आठ गुणों से सम्पन्न हैं, जो ऊर्ध्वलोक के मस्तक पर विराजमान हैं, जो तपश्चरण से सिद्ध हुए हैं, नयो से सिद्ध हैं, संयम से सिद्ध हुए हैं, चारित्र से सिद्ध हुए हैं, जो भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमान काल तीनों कालों से सिद्ध हुए हैं, ऐसे सिद्धों की मैं सदा पूजा करता हूँ, वंदना करता हूँ, अर्चा करता हूँ और उन्हें नमस्कार करता हूँ। मेरे दु:खों का नाश हो, कर्मों का क्षय हो, मुझे रत्नत्रय की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो, समाधिमरण हो और भगवान जिनेन्द्र के गुणों की प्राप्ति हो।

सुदभत्ति (श्रुतभक्ति)

कोटीशतं द्वादश चैव कोट्यो लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्त्र-संख्य मेतच्छ्रुतं पंचपदं नमामि॥1॥
अरहंतभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्ति-जुत्तो सुदणाण-महोवहिं सिरसा॥2॥

एक सौ बारह करोड़, तेरासी लाख अट्ठावन हजार और पाँच पद प्रमाण इस श्रुतज्ञान को मैं नमस्कार करता हूँ। अरहंत भगवान द्वारा अर्थरूप से कहे गये और गणधरदेव द्वारा ग्रंथरूप से ग्रंथित किए गये श्रुतज्ञान रूप महासागर को भक्तिपूर्वक मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ॥1-2॥

इच्छामि भंते! सुदभत्ति काउसग्गो कओ तस्सालोचेउं अंगोवंग पइण्णाय-पाहुडय-परियम्म-सुत्त-पढमाणिओग-पुव्वगय-चूलिया चेव सुत्तथय-थुइ-धम्म-कहाइयं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहि-लाहो सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं।

हे भगवन्! श्रुत भक्ति करने के पश्चात् जो मैंने कायोत्सर्ग किया है उसमें लगे हुए दोषों की आलोचना करने की इच्छा करता हूँ। श्रुतज्ञान के जो अंग, उपांग, प्रकीर्णक, प्राभृतक, परिकर्म, सूत्र, प्रथमानुयोग, पूर्वगत, चूलिका, सूत्रार्थ, स्तुति ओर धर्मकथा आदि भेद हैं उन सबकी मैं सदा पूजा करता हूँ, वंदना करता हूँ, अर्चा करता हूँ और उन्हें नमस्कार करता हूँ। मेरे दु:खों का नाश हो, कर्मों का क्षय हो, मुझे रत्नत्रय की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो, समाधिमरण हो और भगवान जिनेन्द्र के गुणों की प्राप्ति हो।

आइरियभत्ति (आचार्यभक्ति)

श्रुत-जलधि-पारगेभ्य: स्व-परमत-विभावना-पटु-मतिभ्य:।
सुचरित-तपो-निधिभ्यो नमो गुरुभ्यो गुण-गुरुभ्य:॥1॥
छत्तीस-गुण-समग्गे पंच-विहाचार-करण-संदरिसे।
सिस्साणुग्गह-कुसले धम्माइरिये सया वंदे॥2॥
गुरु-भत्ति-संजमेण य तरंति संसार-सायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठ-कम्मं जम्मण-मरणं ण पावेंति॥3॥

ये नित्यं व्रत-मन्त्र-होम-निरताः ध्यानाग्नि-होत्राकुलाः।
षट्-कर्माभिरता-स्तपोधन-धनाः साधु-क्रियाः-साधवः।।4।।
शील-प्रावरणा-गुण-प्रहरणाश् चन्द्रार्कतेजोऽधिकाः।
मोक्षद्वार-कपाट-पाटनभटाः प्रीणन्तु मां साधवः।।5।।
गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञान-दर्शन-नायकाः।
चारित्रार्णव-गम्भीरा मोक्ष-मार्गोपदेशकाः।।6।।

जो श्रुतज्ञान के पारगामी हैं, स्वमत और परमत के विचार करने में कुशल हैं, सुचरित और तप के खजाने हैं और गुणों में महान् हैं; ऐसे गुरुओं को नमस्कार हो।।1।।

जो छत्तीस गुणों से पूर्ण हैं, पाँच प्रकार के आचार के स्वयं पालने वाले हैं, तथा शिष्यों के द्वारा भी उसी आचरण का पालन कराते हैं, शिष्यों के ऊपर अनुग्रह करने वाले हैं, ऐसे धर्माचार्य की मैं वंदना करता हूँ।।2।।

गुरु भक्ति करने से शिष्य घोर संसार-सागर से पार हो जाते हैं। आठ कर्मों का नाश कर देते हैं और जन्म-मरण के दु:ख को फिर कभी नहीं पाते।।3।।

जो प्रतिदिन व्रत, मंत्र और होम में लगे रहते हैं, जो ध्यान रूपी अग्नि में हवन करने वाले हैं, आवश्यकादि षट्क्रियाओं में लीन हैं, तपरूपी धन ही जिनका धन है, जो साधुओं की क्रियाओं को कराने में कारणभूत हैं, अठारह हजार शील रूपी वस्त्र ओढ़ते हैं, चौरासी लाख गुण ही जिनके पास शस्त्र हैं, चन्द्र और सूर्य से भी अधिक जिनका तेज है, जो मोक्षद्वार के दरवाजे खोलने में सुभट (योद्धा की तरह) हैं; ऐसे साधु मेरी रक्षा करे।।4-5।।

जो ज्ञान और दर्शन के नायक हैं, चारित्र रूपी सागर के समान गंभीर हैं, और मोक्षमार्ग का उपदेश देने वाले हैं; ऐसे श्री गुरु/आचार्य हमारी नित्य रक्षा करें।।6।।

इच्छामि भंते! आइरियभत्ति काउसग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं पंचविहाचाराणं आइरियाणं आयारादि-सुद-णाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं तिरयण-गुणपालण-रयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहि-लाहो सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं।

हे भगवन्! श्रुत भक्ति करने के पश्चात् जो मैंने कायोत्सर्ग किया है उसमें लगे हुए दोषों की आलोचना करने की इच्छा करता हूँ। सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन ओर सम्यक्चरित्र से युक्त पंचाचार का पालन करने वाले आचार्यों की, आचारांग आदि श्रुतज्ञान का उपदेश देने वाले उपाध्यायों की, रत्नत्रय गुण का पालन करने वाले समस्त साधुओं की मैं सदा पूजा करता हूँ, वंदना करता हूँ, अर्चा करता हूँ और उन्हें नमस्कार करता हूँ। मेरे दु:खों का नाश हो, कर्मों का क्षय हो, मुझे रत्नत्रय की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो, समाधिमरण हो और भगवान जिनेन्द्र के गुणों की प्राप्ति हो।

पाठ-3

बोहकहा

1 - अब्भास चमक्कारो

एगो अपढिदो सरलो किरिसिओ आसी। सो णियधेणुं गेण्हिदूण सगखेत्तं गदो। तत्थ धेणुणो वच्छस्स जम्मो जादो। अइकोमलं सुंदरं वच्छं दट्ठूण सो तं पडि पेम्महिदओ जादो। सयं गमणे असक्कं तं वच्छं णियकंधे ठविय गिहं आगदो सो। अवर-दिणे तं वच्छं पुणो कंधे ठविय खेत्तं गदो पुणो गिहं तहेव आणीदो। एवंविह कमेण बेवस्साणि गदाणि। जणा पासंति जं-बहुभारवदं वसहं णियकंधं धरिदूण पडिदिणं सो गमणागमणं कुव्वदि। सो वच्छो सणियं सणियं उसहो जादो तेण तस्स भारो वड्ढिदो। तहावि किसाणो तस्स भारं णो अणुहवदि। किं कारणं? पडिदिणं अब्भासवसेण कठिणो वि सरलो हवेइ। जो णियसत्तीए णिरंतरं अब्भसदि सो कदा जगजणचित्ते चमक्कुणदि। इमो अब्भासचमक्कारो सया सव्वेहिं झायव्वो। जो बालओ पडिदिणं विज्जालयस्स कज्जं पुण्णं करेदि, सो परिक्खाकाले चिंतामुत्तो होहिदि। जो पडिदिणं लघुकज्जं णिट्ठावेदि सो जेट्ठो वि कज्जभारेण आउलचित्तो ण कदावि अप्पाणं अणुहवइ। दुक्करकज्जं वि अब्भासेण सुकरं जादं।

बोधकथा

1 - अभ्यास का चमत्कार

एक बिना पढ़ा लिखा सरल कृषक था। वह अपनी गाय को लेकर अपने खेत में गया। उस गाय ने वहाँ पर एक बछड़े को जन्म दिया। अति कोमल सुन्दर बछड़े को देखकर वह उसके प्रति प्रेम हृदय वाला हुआ। स्वयं चलने में असमर्थ उस बछड़े को अपने कंधे पर रखकर वह घर आ गया। दूसरे दिन उस बछड़े को पुन: कंधे पर रखकर वह खेत पर गया और फिर उसी प्रकार घर आ गया। इस प्रकार दो वर्ष निकल गए। लोग देखने लगे कि यह बहुत भारी बैल को अपने कंधे पर रखकर प्रतिदिन आना-जाना करता है। वह बछड़ा धीरे-धीरे बैल हो गया जिससे उसका भार बढ़ गया, फिर भी किसान उसके भार का अनुभव नहीं करता है। क्या कारण है? प्रतिदिन अभ्यास के कारण कठिन कार्य भी सरल हो जाता है। जो अपनी शक्ति के अनुसार निरन्तर अभ्यास करता है, वह कभी संसार के लोगों के चित्त में चमत्कार उत्पन्न करता है। यह अभ्यास का चमत्कार सदा सभी को ध्यान में लाना चाहिए। जो बालक प्रतिदिन विद्यालय का कार्य पूर्ण करता है, वह परीक्षा के समय पर चिन्तामुक्त होगा। जो प्रतिदिन छोटे कामों को पूर्ण कर देता है वह बड़ा होकर भी कार्य के भार से आकुलचित्त अपने आप को कभी भी अनुभव नहीं करता है।

दुष्कर कार्य भी अभ्यास से सुकर हो जाता है।

2 - जीवणस्स मुल्लं

मगधजणवदस्स राओ सेडिगो एगदा राजसहाए पुच्छेदि-देसस्स खज्जसमस्साए दूरकरणट्ठं किं कादव्वं। देसे कं वत्थुं अप्पधणियं अत्थि। मंत्तिपरिसदम्मि सव्वे वियारं कुव्वंति जं अण्णं अइकट्ठेण उवज्जदि पउरमुल्लेण सव्वाणं उवलद्धी होदि। आखेड-विसणलित्तो एक्को सामंतो कहेदि-राय! सव्वादो अप्पयरमुल्लं मंसं अत्थि। तं अज्जिउं अहिय धणस्स वओ वि णत्थि। देहट्ठं अइपोसणयरं च होइ। देसस्स पहाणमंत्ती अभयकुमारो जप्पेदि-'अहं णियवियारं सव्वसमक्खं कल्ल कहहिमि। रत्तीए पहाण मंती सामंतस्स गिहे पविट्ठो। तं पेक्खिऊण सो उव्वेगं गदो। तं धीरं किच्चा पहाणमंतिणा वुत्तं-सेडिग-महाराजो संझाए सहसा रोगेण पीडिदो जादो। राजवेज्जेण कहिदं जं-कस्स वि महंतस्स हिययस्स कणमेत्तमांसेण राजस्स रक्खा हवेज्ज ण अण्णहा। तुमं विस्सासपात्तसामंतो असि। तेण तव हिय यस्स कणमेत्तमंसं कंखेमि। तस्स जं मुल्लं कहेहिसि तं दास्सामि। इत्थं सुणिऊण सामंतस्स मुहमुद्दाए उदासी जादा। सो पुण चिंतेदि-जीविदेण विणा लक्खसुवण्णमुद्दाए वि किं पओजणं। मंतिस्स चरणेसु लग्गिऊण सो भणदि मत्तो लक्खसुवण्णमुद्दाधणं तुमं गेण्हदु एवं पुण अण्णस्स सामंतस्स हिदयमंसं विकिरियेज्ज। मुद्दाधणं समाणीय सव्वसामंताणं गिहद्दारे मंती गदो किंतु केण वि हिययस्स मंसं ण दत्तं अपिदु सुवण्णमुद्दाधणं पदत्तं। मंती णियमंदिरं आगदो। रायसहाए एककोडिसुवण्णमुद्दाधणं रायसमक्खं धरिदं। सेडिगेण पुच्छं-किमट्ठमेदं सुवण्णधणं। सव्वघडणाकमो मंतिणा कहिदो। सव्वेहिं णियपाणरक्खा-करणट्ठं एदाओ मुद्दाओ समप्पिदाओ। इदाणिं भवं चिंतदु-कधं अप्पदरमुल्लं मंसं अत्थि? वत्थुदो सव्वस्स जीवणस्स मुल्लं अणंतमत्थि।

2 - जीवन का मूल्य

मगध जनपद के राजा श्रेणिक एक बार राज सभा में पूछते हैं कि देश की खाद्य समस्या को दूर करने के लिए क्या करना चाहिए? देश में कौन सी वस्तु कम मूल्य वाली है। मंत्रि परिषद् में सभी विचार करते हैं कि अन्न अतिकष्ट से उत्पन्न होता है और बहुत धन से सभी को वह उपलब्ध होता है। आखेट व्यसन में लिप्त एक सामंत कहता है - 'राजन्! सबसे कम मूल्य वाली वस्तु माँस है। उसको अर्जित करने के लिए अधिक धन का व्यय भी नहीं होता है। वह माँस देह के लिए अतिपोषणकर भी होता है।' देश का प्रधान मंत्री अभयकुमार कहता है कि - 'मैं अपना विचार सभी के समक्ष कल कहूँगा।' रात्रि में प्रधानमंत्री ने सामंत के घर प्रवेश किया। उनको देखकर वह उद्वेग को प्राप्त हुआ। उसको धैर्य बंधाकर प्रधानमंत्री ने कहा - 'श्रेणिक महाराज शाम को अचानक रोग से पीड़ित हो गए हैं। राजवैद्य ने कहा है कि- 'किसी भी महंत के हृदय के कणमात्र माँस से राजा की रक्षा हो सकेगी, अन्यथा नहीं। तुम विश्वासपात्र सामंत हो, इसलिए आपके हृदय के कणमात्र माँस को मैं चाहता हूँ। जो उसका मूल्य कहोगे, उसको दे दूँगा।' इस प्रकार सुनकर सामंत की मुख मुद्रा पर उदासी छा गई। वह पुन: विचार करता है कि - जीवन के बिना लाख स्वर्ण मुद्राओं से भी क्या प्रयोजन है? वह मंत्री के चरणों में गिरकर कहता है कि आप मुझसे लाख स्वर्ण मुद्राओं का धन ले लो और किसी अन्य सामंत के हृदय का माँस खरीद लो। मुद्राधन को लेकर सभी सामंतों के गृह द्वार पर मंत्री गया, किन्तु किसी ने भी हृदय का माँस नहीं दिया अपितु स्वर्ण मुद्रा-धन ही प्रदान किया। मंत्री अपने घर आ गया। राज सभा में करोड़ स्वर्ण मुद्रा-धन राजा के समक्ष रख दिया। राजा श्रेणिक ने पूछा - 'कि यह स्वर्ण-धन किस लिए है। सारा घटनाक्रम मंत्री ने कह दिया। सभी ने अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए ये मुद्राएँ समर्पित की हैं। इस समय आप चिंतन करें कि माँस कम मूल्य वाला कैसे है? वस्तुत: सभी के जीवन का मूल्य अनन्त है।

पाठ-4
लघु निबन्ध
1 - णमोक्कारमंत

अम्हे ण्मोक्कारमंते पंचे परमेट्ठिभगवंतं वंदंति। अरिहंता सिद्धा आइरिया उवज्झाया साहुणो इमे ताणं णामाणि संति। णमोक्कारमंतं अणादिणिधणं अत्थि। आइरियसिरिपुप्फदंत-मुणी छक्खंडागमगंथे मंगलाचरणं करिदूण तं सव्वपढमं लिहीअ। जे अरिहंता संति ते सिद्धा अवस्स होंति। चउवीस-तित्थयरा दाणिं सिद्धा होदूण सिद्धालए णिवसंति। अम्हे आइरिय-उवज्झाय-साहु-परमेट्ठिणं अत्थ पस्सामो ते सव्वत्थ विहरंति। तेसु चरणकमलेसु भव्वजीवा सया पढमंति।

1 - णमोकार मन्त्र

इस णमोकार मंत्र में परमेष्ठी भगवान की वंदना करते हैं। अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु, ये उनके नाम हैं। णमोकार मन्त्र अनादिनिधन है। आचार्य श्री पुष्पदंत मुनि ने षट्खण्डागम ग्रन्थ में इस मन्त्र का मंगलाचरण करके इस मन्त्र को सर्वप्रथम लिखा। जो अरिहन्त होते हैं, वे सिद्ध अवश्य होते हैं। चौबीस तीर्थंकर अब सिद्ध होकर सिद्धालय में निवास करते हैं। हम लोग आचार्य, उपाध्याय, साधु परमेष्ठी को यहाँ देखते हैं, वे सर्वत्र विहार करते हैं। उनके चरण कमलों में भव्य जीव सदा प्रणाम करते हैं।

2 - सुहेण जीविदं

जे सिसुणो पइदिणं दुद्धं पिबंति, सुद्धभोयणं भुंजंति, समए खेलंति, जग्गंति, सयंति च, ण कदा कलहंति, जुज्झंति च, सया साहुं अच्चंति, धम्मं सूणिदूण हरिसंति, मायाअ आणं पालंति, गुरुवाणिं चिंतंति, सेट्ठमित्तेहिं सह भमंति, रिउं खमंति, सिक्खं लंभिउं विज्जालअं गच्छंति, वीयराअस्स अरिहंतस्स सद्धाए भत्तिं करंति, जिणसिद्धंतं सुणंति, के ण दूसंति, तिण्णि संझाए गुरुं झंति, ते सया सुहेण जीवंति, दुक्खं जयंति च।

2 - सुख से जीवन

जो शिशु प्रतिदिन दूध पीते हैं, शुद्ध भोजन करते है, समय पर खेलते हैं, जागते हैं, सोते हैं ओर कभी भी कलह नहीं करते हैं, युद्ध (झगड़ा) नहीं करते हैं, सदा साधु की अर्चना करते हैं, धर्म को सुनकर हर्षित होते हैं, माँ की आज्ञा का पालन करते हैं, गुरुवाणी का चिंतन करते हैं, श्रेष्ठ मित्रों के साथ भ्रमण करते हैं, शत्रुओं को क्षमा करते हैं, शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय जाते हैं, वीतराग अरिहंत की श्रद्धा से भक्ति करते हैं, जिन सिद्धान्त को सुनते हैं, किसी को दोष नहीं लगाते हैं, तीनों संध्याओं में गुरु का ध्यान करते हैं, वे सदा सुख से जीते हैं और दु:खों को जीतते हैं।

प्राकृत व्याकरण

नियमावली

नियम 1 – कर्त्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है। जैसे 'सो पढदि' यहाँ कर्त्ता (सो) प्रथम पुरुष एकवचन में है तो क्रिया (पढदि) भी प्रथम पुरुष एकवचन में होगी।

नियम 2 – पुंलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग, इन तीनों लिगों के संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के साथ क्रियापद का रूप वही रहता है। जैसे –सा पढदि। तं पढदि।

नियम 3 – कर्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

नियम 4 – प्राकृत में मात्र दो ही वचन होते हें – एकवचन और बहुवचन।

नियम 5 – वर्तमानकाल की क्रिया में 'है' या 'रहा है' दोनों प्रयोग होते हैं। जैसे–वह जाता है या जा रहा है। दोनों अर्थ में 'गच्छइ' होगा।

विशेष:– शौरेसेनी प्राकृत में अंत 'त' का 'द' हो जाता है तथा महाराष्ट्र प्राकृत में 'इ' हो जाता है।

नियम 6 – तीन पुरुष होते हैं। **(क)** प्रथम (या अन्य) पुरुष अर्थात् वह, वे दोनों, वे सब, किसी व्यक्ति या वस्तु का नाम भी अन्य पुरुष कहा है। **(ख)** – मध्यम पुरुष अर्थात् तू, तुम, तुम दोनों, तुम सब **(ग)** – उत्तम पुरुष अर्थात् मैं, हम दोनों, हम सब। ये नाम स्मरण कर लें।

नियम 7 – कर्ता जिस पुरुष और जिस वचन का होगा, उसी के अनुसार क्रिया और वचन होगा। जैसे तुमं पढसि, यहाँ कर्ता मध्यम पुरुष का एकवचन है तो क्रिया भी उसी अनुसार हुई। तुम्हे पढह इत्यादि।

नियम 8 – प्राकृत में कुल 10 स्वर होते हैं। जिनमें पाँच ह्रस्व स्वर होते हैं और पाँच दीर्घ स्वर होते हैं।

1. ह्रस्व स्वर – अ इ उ ए ओ
2. दीर्घ स्वर – आ ई ऊ ए ओ

इस प्रकार आपने देखा कि ऐ और और स्वर भी ए और ओ के रूप में ही अभिव्यक्त होते हैं।

प्रयोग – बच्चो! देखो बोली भाषा में भी हम लोग सामान्यत: इन स्वरों का प्रयोग नहीं करते हैं। इसलिए प्राकृत पहले बोली भाषा के रूप में प्रचलित थी और यह जन सामान्य की भाषा थी। जैसे– कैलास, ऐरावनत, ऐनक, शैल। सामान्य रूप से हम बोलते हैं– केलास या कइलास बस यही प्राकृत भाषा है। इसी तरह एरावत या अइरावत, एनक या अइनक, सेल या सइल। बोलो – यौवन, बोलने में आएगा – योवन, यही प्राकृत है।

नियम–9– प्राकृत में अ: विसर्ग का लोप होकर उसके स्थान पर ओ या ए हो जाता है। जैसे– देव: – देवो, जिण:–जिणो, बाला:–बालाए, माला:–मालाए।

नियम 10 –संज्ञा शब्दों में जो शब्द ओकारान्त लिखे जाते हैं वे सभी पुं. लिंग के जानना और जिन शब्दों में अनुस्वार रहता है जैसे जोव्वणं उन्हें नपुंसक लिंग के जानना।

प्राकृत में व्यंजनों की संख्या 29 है–

क वर्ग –क, ख, ग, घ
च वर्ग – च, छ, ज, झ
ट वर्ग– ट, ठ, ड, ढ, ण
त वर्ग – त, थ, द, ध, न
प वर्ग – प, फ, ब, भ, म
अन्तस्थ –य, र, ल, व
ऊष्माक्षर – स, ह

तीनों पुरुषों के रूप एक साथ देखें-

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्य पुरुष	सो (पुं.) सा (स्त्री.) तं (नपुं.)	ते (पुं.), ताओ (स्त्री.), ताणि (नपुं.)
मध्यम पुरुष	तुमं	तुम्हे
उत्तम पुरुष	अहं	अम्हे

नियम 11 –'अस' क्रियापद से एकवचन में 'अत्थि' और बहुवचन में 'संति' रूप होता है, यह स्मरण में रखें।

नियम 12 – अव्ययों के रूप नहीं चलते हैं।

नियम 13 –कहीं संज्ञा का विशेषण सर्वनाम शब्द बनते हैं। जैसे– ये बालक, वे फल आदि। इसमें संज्ञा शब्द बालक, फल हैं। सर्वनाम ये, वे हैं। इन सर्वनामों की विभक्ति, लिंग, वचन संज्ञा के अनुसार चलते हैं।

नियम 14–कहीं संज्ञा के बिना सर्वनाम शब्द ही कर्ता में प्रयुक्त होते हैं।

नियम 15– जो वस्तु या व्यक्ति के संबंध में कुछ बतलाए वह क्रिया कहलाती है। क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं–1. **सकर्मक क्रिया**–जिसमें क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़े या जिसमें किसका, किसकी, किस ओर लगाने पर कर्म का ज्ञान या अपेक्षा होवे वह सकर्मक क्रिया है। जैसे– वह पूजा करता है, इस वाक्य में पूजा करना, इस क्रिया में किसका, किसकी शब्द लगाकर पूछने पर कर्म की अपेक्षा ज्ञात होती है इसलिए यह सकर्मक क्रिया है। **2. अकर्मक क्रिया**– जिसमें क्रिया का प्रभाव कर्ता पर पड़े या किसकी, किसका इन प्रश्नों की अपेक्षा न रहे वह अकर्मक क्रिया है। जैसे वह प्रसन्न होता है। यहाँ प्रसन्न होने का प्रभाव 'वह' कर्ता पर है, किसका, किसकी अपेक्षा नहीं है इसलिए अकर्मक क्रिया है। सकर्मक क्रिया के साथ कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

नियम 16 – इस अभ्यास में दिए गए स्त्रीलिंग के सर्वनाम शब्दों के साथ स्त्रीलिंग के ही संज्ञा शब्द प्रयुक्त होंगे।

नियम 17 – प्राकृत वर्णमाला में ङ एवं ञ् का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता है। ये व्यंजन अपने वर्ग के व्यंजनों के साथ अनुस्वार (ं) के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे– जङ्घा का प्राकृत में जंघा, वाञ्छा-वंछा, पङ्क-पंक, मञ्च-मंच, शङ्का-संका।

प्राकृत में 'श' एवं 'ष' के स्थान पर 'स' का ही प्रयोग होता है। जैसे-सुरेश-सुरेस, मनीष-मनीस, आशीष-आसीस।

नियम 18 –इस अभ्यास में दिए गए नपुं. के सर्वनाम के साथ नपुं. के ही संज्ञा शब्द प्रयुक्त होंगे।

नियम 19 – जो कर्ता को अभीष्ट हो और क्रिया जिसे चाहे वह शब्द कर्म होता है। कर्म की पहचान के लिए देखें नियम 15. द्वितीया विभक्ति 'को' से पहचानी जाती है।

नियम 20 –'विणा' के साथ द्वितीया विभक्ति लगती है।

नियम 21– ण + अत्थि – णत्थि (नहीं है)

नियम 22 –द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में पुंलिंग शब्दों के अन्त में 'ए' प्रत्यय लगाकर भी रूप बनता है। शास्त्रों में यही प्रयोग बहुतकर मिलता है। अभ्यास 1 में दोनों रूप दिखाए हैं–जिणा या जिणे।

नियम 23 – क्ष, त्र, ज्ञ इन संयुक्त व्यंजनों का प्राकृत में स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता है। इनके स्थान पर अन्य वर्ण आ जाते हैं। जैसे–

क्षत्री - खत्ती (क्ष को ख और त्र का त्त), पुत्र-पुत्त, मित्र-मित्त, ज्ञानी-णाणी (ज्ञा का ण) ज्ञेय-णेय

नियम 24–तृतीया विभक्ति– 'के द्वारा, से' अर्थ में लगती है। यह करण कारक है। सहायक कारण को करण कहते हैं। जैसे– वह कलम से लिखता है, यहाँ 'कलम' सहायक कारण है। यही करण है। इसमें तृ. वि. का प्रयोग होगा। इसी तरह–वह किससे पढ़ता है, वह गुरु से सीखता है इत्यादि।

नियम 25 – सह (साथ) के अर्थ में भी तृ.वि. का प्रयोग होता है।

नियम 26–मेरे द्वारा, तेरे द्वारा यह रूप तृ.वि. जानना। इसी के अनुसार क्रिया प्रयुक्त नहीं होगी। जैसे–मए, होइ, अम्हेहि, होंति।

नियम 27–'विणा' के अर्थ में तृतीया विभक्ति भी होती है।

नियम 28 – सव्व, क आदि सर्वनाम के साथ क्रिया अन्य पुरुष की ही होती है।

नियम 29 – स्त्रीलिंग के इ एवं उकारान्त शब्दों में तृ.वि. में दीर्घ होकर एक. में ए और बहु. में हि या हिं लगता है। जैसे–जुवईए, जुवईहि, धेणूए, धेणूहि, धेणूहिं।

बहु. में हि या हिं का प्रयोग पुं., नपुं. के शब्द में भी होता है।

नियम 30 – चतुर्थी विभक्ति 'के लिए' अर्थ में होती है। कुछ देने के लिए, उपदेश आदि प्रदान करने के लिए चतुर्थी विभक्ति होती है।

नियम 31 – 'णमो' के साथ चतुर्थी विभक्ति होती है।

नियम 32 – इ, उ कारान्त शब्दों के आगे स्त्री, लिंग में दीर्घ होकर ही 'ए' और 'ण' का प्रत्यय लगते हैं। जैसे–जुवईए, जुवईण, धेणुए धेणूण।

नियम 33 – चतुर्थी विभक्ति के बहुवचन में अन्त में –ण' के स्थान पर 'णं' भी होता है।

नियम 34 – पंचमी विभक्ति 'से' के अर्थ में होती है। जब कोई वस्तु कहीं से अलग हो, उत्पन्न हो, कारण अर्थ में या पढ़ना, तुलना करना, डरना, रक्षा करना आदि अर्थ में हो तो पंचमी विभक्ति होती है।

नियम 35 – (भूतकाल प्रयोग) भूतकाल की क्रिया सभी क्रियापदों में सभी पुरुषों एवं वचनों में 'ईअ' जोड़ने से बन जाता है। जैसे पढ़ीअ, खेलीअ, चलीअ आदि। यह नियम अकारान्त क्रियाओं के लिए है।

नियम 36 – आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाओं के अन्त में सभी पुरुषों एवं वचनों में 'हीअ' जोड़कर रूप बनते हैं। जैसे–ठाहीअ, होहीअ आदि।

नियम 37 – पंचमी विभक्ति में एकवचन में मूल शब्द में 'आदो' या 'दो' प्रत्यय जुड़कर भी रूप बनते हैं जैसे ववहारादो, णिच्छयदो, णयदो। कहीं पर विभक्ति रहित शब्द का प्रयोग भी होता है। मात्र अन्त में दीर्घ स्वर हो जाता है। जैसे–ववहारा, णियमा आदि।

अभ्यास 1

(क) सर्वनाम शब्द- षष्ठी विभक्ति - मज्झ (मेरा), तुज्झ (तेरा)

(ख) संज्ञा शब्द- तिसा (प्यास, तृषा), संझा (संध्या), णिसा (रात्रि), पुढवी (पृथ्वी), अग्गि (अग्नि), दित्ति (दीप्ति), सति (स्मृति), मइ (मति)।

(ग) क्रिया पद- विहर (विहार करना), लंभ (प्राप्त करना), सक्क (समर्थ होना), धोव (धोना), कर (करना), मुण (जानना), थुण (स्तुति करना)

व्याकरण

सर्वनाम शब्दों के षष्ठी विभक्ति में रूप देखें-

लिंग	एकवचन	अर्थ	बहुवचन	अर्थ
	मज्झ	मेरा	अम्हाण	हम सबका, हम दोनों का
	तुज्झ	तेरा	तुम्हाण	तुम सबका, तुम दोनों का

सूचनाः-1. शेष सभी रूप चतुर्थी वि. की तरह हैं।

2. संज्ञा शब्दों के रूप भी चतुर्थी वि. की तरह जानना।

नियम 38-सम्बन्ध बताने के लिए 'का, की, के' लगने पर षष्ठी वि. होती है।

भविष्यत् काल की क्रियाएं-

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु.	पासिहिइ, ठाहिइ	पासिहिंति, ठाहिंति
मध्यम पु.	पासिहिसि, ठाहिसि	पासिहिह, ठाहिह
उत्तम पु.	पासिहिमि, ठाहिमि	पासिहिमो, ठाहिमो

नियम 39- भविष्यत्काल के लिए अकारान्त क्रियाओं में 'हि' जोड़ते हैं। 'हि' जोड़ने पर अन्त 'अ' का 'इ' हो जाता है। बाद में वर्तमानकाल की क्रियाओं के प्रत्यय इ, न्ति, सि, ह, मि, ओ जुड़ जाते हैं।

नियम 40-आकारान्त, एकारान्त एवं ओकारान्त क्रियाओं में 'हि' जुड़ने पर अन्त्य अ का इ नहीं होता है। ठाहिमि, ठाहिमो

नियम 41- द्वितीया वि. एवं षष्ठी वि. के साथ लगने वाले 'का, के' अन्तर को समझ लें। जहाँ क्रिया का सम्बन्ध कर्म से होगा वहाँ कर्म में द्वि.वि. होगी। उस कर्म से जिसका सम्बन्ध होगा उस सम्बन्ध को बताने के लिए षष्ठी वि. होगी।

नियम 42- शौरसेनी प्राकृत में 'न' के स्थान पर 'ण' होता है।

नियम 43-आचार्यों के द्वारा प्रयुक्त प्रयोगों को भी ध्यान रखें-आ, ओकारान्त का प्रथम पु. एकवचन में ठाही, होही (स.सार. 415)

अभ्यास 1

1. प्रयोग देखें–

मैं घूमूँगा–अहं घुमिहिमि। वे सब सोयेंगे–ते सयिहिंति। वह नाचेगी–सा णच्चिहिइ। मैं होऊँगी–अहं होहिमि। हम दोनों खेलेंगे–अम्हे खेलिहिमो। वे देखेंगे–ते पासिहिंति। वे आज क्या करेंगे–ते अज्ज किं करिहिंति। वह जिन की स्तुति करेगा–सो जिणं थुणिहिइ। वह जिन की स्मृति करेगा–सो जिणस्स सतिं करिहिइ।

2. अभ्यास करें–

(क) वह लिखेगा। तुम सोओगे। वह पुस्तक पढ़ेगा। मैं आज अवश्य विहार करूँगा। तुम मुझको क्या दोगे? वह उनसे क्या प्राप्त करेगा? वह कुलपति को धन देगा।

(ख) हम सब जिन को देखेंगे। वे वहाँ जाएँगे। तुम गाय को कब बुलाओगे? वे शास्त्रों को पढ़ेंगे। साधु शत्रु को क्षमा करेंगे। जब तुम आओगे तब मैं जाऊँगा।

(ग) यह मणि बालक की है। युवती की माता आ रही है। मित्र का यह घर है। यह पानी नदियों का है। यह दीप्ति रत्नों की है। जो देव की स्मृति करेगा वह शास्त्र को जानेगा। जो गायों की रक्षा करेगा वह धन प्राप्त करेगा।

3.	**अशुद्ध वाक्य**	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
	इमा जलं नईए अत्थि	इमं जलं णईए अत्थि	13,41
	ताण घरं सन्ति	ताण घरं अत्थि	11
	तस्स पोत्थआणि अत्थि	तस्स पोत्थआणि संति	11
	जो सत्थो मुणिहिसि सो थुणिहिसि	जो सत्थं मुणिहिइ सो थुणिहिइ	3,1
	देवस्स घरस्स णत्थि	देवस्स घरं णत्थि	41

4. शुद्ध करो तथा नियम बताओ–

अम्हाण को संति। इमं छत्तो अत्थि। तुम्हाण सीसं णत्थि। अहं तत्थ ठाहेमि। तुमं पुरिसस्स धणस्स इच्छसि। माआ छत्तस्स पालइ। छत्तं धणं अत्थि।

5. गृह कार्य–

- ❖ अभ्यास 2 (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाएँ।
- ❖ अभ्यास 2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाएँ।
- ❖ अभ्यास 11 एवं 12 के क्रियापद के भविष्यत्काल के रूप लिखो।

अभ्यास 2

(क) सर्वनाम शब्द – सप्तमी विभक्ति–अम्हम्मि (मुझमें), तुम्हम्मि (तुममें)
सूचना– अन्य सर्वनामों के रूप नीचे देखें।
(ख) संज्ञा शब्द–वत्थ (वस्त्र) (नपुं.), कम्म (कर्म) (नपुं.), वेरग्ग (वैराग्य) (नपुं.), गंथ (ग्रन्थ या पुस्तक) (पुं.), सद्धा (श्रद्धा) (स्त्री.), सिक्खा (शिक्षा), आणा (आज्ञा), (स्त्री.)
(ग) क्रिया पद– जण (उत्पन्न करना), बंध (बांधना), धार (धारण करना), मार (मारना), वण्ण (वर्णन करना)

व्याकरण

सर्वनाम शब्दों के सप्तमी विभक्ति में रूप देखें–

लिंग	एकवचन	अर्थ	बहुवचन	अर्थ
	अम्हम्मि	मुझमें	अम्हेसु	हम सब में, हम दोनों में
	तुम्हम्मि	तुममें	तुम्हेसु	तुम सब में, तुम दोनों में

सूचना–शेष सभी के रूप इसी प्रकार बनायें।
संज्ञा शब्दों के लिए सप्तमी विभक्ति में रूप–

लिंग	एकवचन	बहुवचन
(पुं., अकारान्त)	बालअम्मि	बालएसु
(पुं. इ, उ कारान्त)	सुहिम्मि, साहुम्मि	सुधीसु, साहूसु
(स्त्री., आकारान्त)	बालाए	बालासु
(स्त्री., इ, ई, उ कारान्त)	जुवईए, णईए, सासूए	जुवईसु, णईसु, सासूसु

नियम 43– में, पे, पर के अर्थ में सप्तमी वि. होती है।
नियम 44 –प्राकृत में विधिलिङ् एवं लोट् लकार (विधि एवं आज्ञावाचक) के प्रयोग एक समान होते हैं। देखें–

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम (अन्य) पु.	हसउ, ठाउ	हसंतु, ठंतु
मध्यम पु.	हसहि, ठाहि	हसह, ठाह
उत्तम पु.	हसमु, ठामु	हसमो, ठामो

नियम 45– पुं., नपुं. अकारान्त शब्दों में सप्तमी वि. के एकवचन में 'ए' भी लगाकर रूप बनते हैं–बालए, जीवे, जिणे आदि। यह ध्यान रहे कि बाल और बालअ दोनों शब्द है। उसमें 'बाल' के रूप बाले, बालेसु होंगे।
नियम 46–आज्ञावाचक शब्दों में जहाँ कर्ता का पता नहीं चलता है वहाँ मध्यम पुरुष के कर्ता का प्रयोग होता है। जैसे–शास्त्र पढ़ो तो इसका अर्थ तुम या तुम सब शास्त्र पढ़ो–तुमं सत्थं पढहि या तुम्हे सत्थं पढह। यहाँ नहीं खेलो–अत्थ मा खेलहि।

अभ्यास 2

1. प्रयोग देखें-

मुझमें वैराग्य है-अम्हम्मि वेरग्गं अत्थि। हम सभी में श्रद्धा है-अम्हेसु सद्धा अत्थि। मनुष्य में कर्म हैं-णरे कम्माणि संति। सुधी में भक्ति है-सुहिम्मि भत्ती अत्थि। माला में फूल हैं-मालाए पुप्फाणि संति। सभी प्राणियों में ज्ञान है-सव्वम्मि पाणिम्मि णाणं अत्थि। मैं नाचूँ-अहं णच्चमु। तुम सब खेलो-तुम्हे खेलह।

2. अभ्यास करें-

(क) पृथ्वी पर सागर है। नदी में जल है। गुरु में ज्ञान है। शिष्य विद्यालय में पढ़ता है। पुस्तक में वैराग्य नहीं है। बहू प्यास में पानी चाहती है। वे दोनों नदी में नहाते हैं।

(ख) शिष्य आज्ञा को धारण करें। युवतियाँ कलह नहीं करें। कोई गायों को नहीं मारें। तुम शत्रु को बुलाओ। सभी को ग्रन्थ का वर्णन करना चाहिए। तुम सब क्यों हँसे। सासू आज क्यों नाची? शिक्षा अवश्य प्राप्त करो। तुम दोनों शास्त्र पढ़ो।

(ग) नदियों में बालक तैरते हैं। युवतियाँ मालाओं में फूल धारण करती है। वे पानी में शत्रुओं को बाँधते हैं। तुम सब जिन (भगवान) में श्रद्धा धारण करो।

3.

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
मसाणस्स को वसइ	मसाणम्मि को वसइ	43
जिणए कम्मं णत्थि	जिणे कम्मं णत्थि	45
साडीहि पुप्फाणि णत्थि	साडीसु पुप्फाणि संति	43,11
सो आणाम्मि णत्थि	सो आणाए णत्थि	रूप
ते कत्थ ठामु	ते कत्थ ठंतु	1
मा रूवसु	मा रूवहि	46

4. शुद्ध करो तथा नियम बताओ-

गंथो णाणो अत्थि। जुवईसु सिक्खा ण संति। जिणेसु तुमं सद्धं धारउ। सायरम्मि जलं णत्थि। तुमं सतिं किं जाणमु। तत्थ मा पढउ।

5. गृह कार्य-

- ❖ अभ्यास 2 (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाएँ।
- ❖ अभ्यास 2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाएँ।
- ❖ इस अभ्यास में दी गई क्रियाओं के विधि में रूप बनाएँ।

अभ्यास 3

(क) संज्ञा शब्द- अरिहंत (अरिहंत), सिद्ध (सिद्ध), आइरिअ (आचार्य), उवज्झाअ (उपाध्याय), चारित्तं (चारित्र), जिणवाणी (जिनवाणी), दिव्वझुणी (दिव्यध्वनि), सिद्धंतं (सिद्धान्त) (नपुं.)

(ख) विशेषण शब्द-अप्प (थोड़ा, अल्प, छोटा), जेट्ठ (बड़ा), पिअ (प्रिय), उच्च (ऊँचा), सेट्ठ (श्रेष्ठ), खुद्द (नीच)।

(ग) क्रिया पद- दरिस (दिखलाना), तक्क (तर्क करना), तिप्प (संतुष्ट होना), पच (पकाना), दूस (दूषण लगाना), पा (पीना)

व्याकरण

नियम 47- सम्बन्ध कृदन्त - किसी कार्य को करके अगला कार्य करने के लिए जैसे-'नमस्कार करके, सुनकर, जागकर' आदि भावों को प्रगट करने के लिए क्रिया पदों में कुछ प्रत्यय लगाकर जो शब्द बनते हैं वे सम्बन्ध कृदन्त कहलाते हैं। सभी अकारान्त क्रियाओं में 'इ' जोड़कर 'ऊण, इण, ऊणं, दूणं, उ, तु' लगाने पर ये कृदन्त बनते हैं। जैसे - णम क्रिया से णमिऊण, णमिदूण, णमिऊणं, णमिदूणं, णमिउ, णमित्तु इन सबका अर्थ है नमस्कार करके।

नियम 48 -आ, ओकारान्त क्रियाओं में 'इ' जोड़े बना उपर्युक्त प्रत्यय लगते हैं। जैसे-ठाऊण, ठादूण, होऊण, होदूण।

नियम 49- अकर्मक क्रियाओं से बने जब सम्बन्ध कृदन्त प्रयुक्त होते हैं तो 'कर्म' की आवश्यकता नहीं होती है। सकर्मक क्रिया से बने सम्बन्ध कृदन्त के साथ 'कर्म' में द्वितीया वि. लगाकर प्रयोग किया जाता है।

नियम 50-प्राकृत में चार काल (वर्तमान, भूत, भविष्यत्, विधि या आज्ञा) में ही क्रिया पदों के रूप बनते हैं। कृदन्तों के साथ चारों कालों का प्रयोग होता है।

नियम 51-सम्बोधन वि. के लिए एकवचन में प्रत्यय के बिना मूल शब्द जैसे हे देव, हे वारि इत्यादि तथा बहुवचन में प्रथमा वि. का ही रूप बनता है। हे देवा, हे वारीणि इत्यादि।

अभ्यास 3

1. प्रयोग देखें-

क- (अकर्मक क्रिया से बने कृदन्त)-

वह हँसकर जीती है-सा हसिऊण जीवइ। तुम छिपकर रोते हो-तुमं लुक्किउं रूवसि। वे दोनों डरकर रहते हैं-ते डरिऊण णिवसंति। वह रोकर सोएगी-सा रूविदूण सयिहिइ। बालक खेलकर कहाँ गया-बालओ खेलिऊण कत्थ गच्छीअ।

ख-(सकर्मक क्रिया से बने कृदन्त)-

वह अरिहंत को नमस्कार करके सोता है-सो अरिहंतं णमिऊण सयइ। देव भक्ति करके चले गए-देवा भत्तिं करिदूण गच्छीअ। वे सिद्धों को जानकर के संतुष्ट होंगे-ते सिद्धे (नि. 22) जाणिऊण तिप्पिहिंति। तुम जिनवाणी की रक्षा करके पढ़ो-तुमं जिणवाणिं रक्खिउ पढहि।

2. अभ्यास करें-

मैं सोकर वहाँ जाऊँ। वे सब तर्क करके पढ़ते हैं। छात्र गिरकर रोया। माँ शिशु की रक्षा करके जीती है। तुम छात्र को दोषी करके संतुष्ट मत होओ। वह ग्रन्थ को पढ़कर वर्णन करता था। हम सब सिद्धांत को जानकर तर्क करेंगे।

3.	**अशुद्ध वाक्य**	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
	सा जुज्झऊण पढइ	सा जुज्झिऊण पढइ	47
	गुरु सीसो रक्खिउं जीवइ	गुरु सीसं रक्खिउं जीवइ	49
	जुवई तक्खिदूण गच्छीह	जुवई तक्किदूण गच्छीअ	

4. शुद्ध करो तथा नियम बताओ-

सो ठाइदूण गच्छइ। ते थक्किउं गच्छइ। देवो घूमऊण तिप्पइ। ते भतीं करिदूण वसंति। तुमं हसिदूण जीवसि।

5. गृह कार्य-

❖ इस अभ्यास में दिए सभी क्रियापदों के सम्बन्ध कृदन्त बनाएँ।

अभ्यास 4

(क) संज्ञा शब्द- भगवंत (भगवान), वीयराअ (वीतराग), धम्म (धर्म), अप्पाण (आत्मा), जम्म (जन्म), राय (राजा) - ये सभी पुंलिंगवाची हैं।

(ख) संख्यावाची विशेषण शब्द-एग (एक), दोण्णि (दो), तिण्णि (तीन), चउरो (चार), पंच (पाँच), छ (छह), सत्त (सात), अट्ठ (आठ), णव (नौ), दह (दस)

(ग) क्रिया पद- चिंत (चिंतन करना), भम (घूमना), सेव (सेवा करना), झा (ध्यान करना)

व्याकरण

नियम 52- हेत्वर्थक कृदन्त - क्रिया पद में 'के लिए' लगने पर जो भाव प्रकट होता है वह हेत्वर्थक कृदन्त है। जैसे– खाने के लिए, नाचने के लिए इत्यादि। इन कृदन्तों के रूप सर्वत्र समान रहते हैं, अत: अव्यय कहलाते हैं। इसके लिए क्रिया में 'उं' जोड़ा जाता है। 'उं' से पहले अकारान्त क्रिया में 'इ' भी जुड़ता है। आ, ओकारान्त क्रिया में नहीं। जैसे–हसिउं, गच्छिउं, पासिउं, लिहिउं, पढिउं, खाउं, गाउं, झाउं आदि। नियम 49 यहाँ भी लगेगा।

नियम 53 -एक शब्द के रूप पुं. नपुं. लिंग में अकारान्त शब्दों के समान चलते हैं एवं स्त्रीलिंग में आकारान्त शब्दों के समान चलते हैं। जैसे–एक देव–एगो देवो, एक देव के द्वारा–एगेण देवेण, एक देव के लिए–एगस्स देवस्स, एक बालिका–एगा बालिगा इत्यादि। यहाँ देव, बालिका ये संज्ञा विशेष्य कहलाती हैं। संख्यावाची शब्द विशेषण कहलाते हैं। इन विशेषणों में विभक्ति विशेष्य के अनुसार लगती है।

नियम 54-'एक' को छोड़कर सभी संख्यावाची शब्द (दो, तीन, चार आदि) प्राकृत में तीनों लिंगों में समान होते हैं। जैसे–दोण्णि छत्ता, दोण्णि जुवईओ, दोण्णि फलाणि।

नियम 55–2 से लेकर 18 तक के शब्द सभी विभक्तियों में बहुवचन में ही चलते हैं। जैसे–तिण्हं गुत्तीणं, तिण्हं लेस्साणं, छसु जीव णिकाएसु, छण्हं आवासयाणं।

अभ्यास 4

1. प्रयोग देखें-

भगवान वीतराग हैं-भगवंतो वीयराओ अत्थि। वीतराग भगवान का ध्यान करो-वीयराअं भगवंतं झाहि। (नि. 46,41)। भगवान का ध्यान करने के लिए वह चिंतन करता है-भगवंतं झाउं (नि. 49) सो चिंतइ। यहाँ एक राजा है-अत्थ एगो रायो अत्थि। आठ मालाएँ हैं-अट्ठ मालाओ संति। छह जिनवाणी हैं-छ जिणवाणीओ संति। आठ कर्मों में आत्मा रहती है-अट्ठसु कम्मसु अप्पाणो वसइ।

2. अभ्यास करें-

(क) वह पढ़ने के लिए जाता है। वह सोने के लिए गई। मैं गाने के लिए हँसता हूँ। तुम ध्यान करने के लिए प्रात: उठते हो। तुम पढ़ने के लिए विद्यालय जाओ। एक बालक प्रतिदिन रोता है। वह खाने के लिए कहाँ जा रहा है।

(ख) तुम सब जीने के लिए खाओ। वे साधु जीने के लिए खाते हैं। वे भगवान को देखने के लिए शीघ्र क्यों जा रहे हैं? उन नगरों में वृक्ष हैं। वे सब गाने के लिए कलह करते हैं।

(ग) एक बालक के साथ गुरु हैं । दो मालाओं में फूल हैं। वीतराग भगवान में चार ज्ञान नहीं है। एक विद्यालय में पानी है। आत्मा में दश धर्म हैं।

3.	**अशुद्ध वाक्य**	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
	एगं बालओ पढइ	एगो बालाओ पढइ	53
	एगेण छत्तस्स इमं वत्थु अत्थि	एगस्स छत्तस्स इमं वत्थुं अत्थि	53
	सा वीयराओ सेविउं गच्छइ	सा वीयराअं सेविउं गच्छइ	49
	दो मालाओ	दोण्णि मालाओ	54

4. शुद्ध करो तथा नियम बताओ-

णयरो पासिउं गच्छइ। तुमं कत्थ भमिउं गच्छइ। एगो माला अत्थि। पंच पोत्थओ संति। तिण्णिओ सायरो संति।

5. गृह कार्य-

- ❖ अभ्यास 2(क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाएँ।
- ❖ अभ्यास 2(ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाएँ।
- ❖ इस अभ्यास में दी गई क्रियाओं के हेत्वर्थक कृदन्त बनाएँ।

शब्दरूप (संज्ञा एवं सर्वनाम)

1. जिण = जिन / जिनेन्द्र भगवान् (अकारान्त, पुंलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जिणो	जिणा
द्वितीया	जिणं	जिणा / जिणे
तृतीया	जिणेण	जिणेहिं
चतुर्थी	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
पंचमी	जिणत्तो	जिणाहिंतो
षष्ठी	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
सप्तमी	जिणे, जिणम्मि	जिणेसु
संबोधन	हे जिण	हे जिणा

2. मित्त = मित्र (अकारान्त, नपुंसकलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	मित्तं	मित्ताणि
द्वितीया	मित्तं	मित्ताणि
तृतीया	मित्तेण	मित्तेहिं
चतुर्थी	मित्तस्स	मित्ताण, मित्ताणं
पंचमी	मित्तत्तो	मित्ताहिंतो
षष्ठी	मित्तस्स	मित्ताण, मित्ताणं
सप्तमी	मित्तम्मि, मित्ते	मित्तेसु
संबोधन	हे मित्त	हे मित्ताणि

3. बाला = बालिका (आकारान्त, स्त्रीलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	बाला	बालाओ
द्वितीया	बालं	बालाओ
तृतीया	बालाए	बालाहिं
चतुर्थी	बालाअ	बालाण
पंचमी	बालत्तो	बालाहिंतो
षष्ठी	बालाअ	बालाण, बालाणं
सप्तमी	बालाए	बालासु
संबोधन	हे बाला	हे बालाओ

4. **णाणि = ज्ञानी (इकारान्त, पुंलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	णाणी	णाणिणो
द्वितीया	णाणिं	णाणिणो
तृतीया	णाणिणा	णाणीहिं
चतुर्थी	णाणिणो	णाणीण, णाणीणं
पंचमी	णाणित्तो	णाणीहिंतो
षष्ठी	णाणिणो	णाणीण, णाणीणं
सप्तमी	णाणिम्मि	णाणीसु
संबोधन	हे णाणी	हे णाणिणो

5. **वारि = पानी (इकारान्त, नपुंसकलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	वारि	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारीहिं
चतुर्थी	वारिस्स	वारीण, वारीणं
पंचमी	वारित्तो	वारीहिंतो
षष्ठी	वारिस्स	वारीण, वारीणं
सप्तमी	वारिम्मि	वारीसु
संबोधन	हे वारि	हे वारीणि

6. **जुवई = युवती (इकारान्त, स्त्रीलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	जुवई	जुवईओ
द्वितीया	जुवइं	जुवईओ
तृतीया	जुवईए	जुवईहिं
चतुर्थी	जुवईओ	जुवईण/जुवईणं
पंचमी	जुवइत्तो	जुवईहिंतो
षष्ठी	जुवईओ	जुवईण/जुवईणं
सप्तमी	जुवईए	जुवईसु
संबोधन	जुवइ	जुवईओं

7. **गामणी = ग्रामणी (ईकारान्त, पुंलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	गामणी	गामणिणो
द्वितीया	गामणिं	गामणिणो
तृतीया	गामणिणा	गामणीहिं
चतुर्थी	गामणिस्स	गामणीण, गामणीणं
पंचमी	गामणित्तो	गामणीहिंतो
षष्ठी	गामिणिस्स	गामणीण, गामणीणं
सप्तमी	गामिणिम्मि	गामणीसु
संबोधन	हे गामणि	हे गामणी

8. **णई = नदी (ईकारान्त, स्त्रीलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	णई	णईओ
द्वितीया	णइं	णईओ
तृतीया	णईए	णईहिं
चतुर्थी	णईआ	णईण/णईणं
पंचमी	णइत्तो	णईहिंतो
षष्ठी	णईआ	णईण/णईणं
सप्तमी	णईए	णईसु
संबोधन	णइ	णईसु

9. **साहु = साधु (उकारान्त, पुंलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	साहू	साहुणो
द्वितीया	साहुं	साहुणो
तृतीया	साहुणा	साहूहिं
चतुर्थी	साहुस्स	साहूण, साहूणं
पंचमी	साहुत्तो	साहूहिंतो
षष्ठी	साहुस्स	साहूण, साहूणं
सप्तमी	साहुम्मि	साहूसु
संबोधन	हे साहु	हे साहुणो

10. **वत्थु = वस्तु (उकारान्त, नपुंसकलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	वत्थुं	वत्थूणि
द्वितीया	वत्थुं	वत्थूणि
तृतीया	वत्थुणा	वत्थूहि
चतुर्थी	वत्थुणो	वत्थूण, वत्थूणं
पंचमी	वत्थुत्तो	वत्थूहिंतो
षष्ठी	वत्थुस्स	वत्थूण, वत्थूणं
सप्तमी	वत्थुम्मि	वत्थुसु
संबोधन	वत्थु	वत्थूणि

11. **धेणु =धेनु / गाय (उकारान्त, स्त्रीलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	धेणू	धेणूओ
द्वितीया	धेणुं	धेणूओ
तृतीया	धेणूए	धेणूहिं
चतुर्थी	धेणूए	धेणूण/धेणूणं
पंचमी	धेणुत्तो	धेणूहिंतो
षष्ठी	धेणूए	धेणूण/धेणूणं
सप्तमी	धेणूए	धेणुसु
संबोधन	धेणु	धेणूओ

12. **त = वह (पुंलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	सो	ते
द्वितीया	तं	ते
तृतीया	तेण	तेहि
चतुर्थी	तस्स	ताण/ताणं
पंचमी	ताओ	ताहिंतो
षष्ठी	तस्स	ताण/ताणं/तेसिं
सप्तमी	तम्मि	तेसु

13. **त = वह (स्त्रीलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	सा	ताओ
द्वितीया	तं	ताओ
तृतीया	ताए	ताहि
चतुर्थी	ताअ	ताण/ताणं
पंचमी	तत्तो	ताहिंतो
षष्ठी	ताअ	ताण/ताणं/तासिं
सप्तमी	ताए	तासु

14. **त = वह (नपुंसकलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	ते	ताणि
द्वितीया	तं	ताणि
तृतीया	तेण	तेहि
चतुर्थी	तस्स	ताण/ताणं
पंचमी	ताओ	ताहिंतो
षष्ठी	तस्स	ताण/ताणं
सप्तमी	तम्मि	तेसु

15. **अहं = मैं (सर्वनाम)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	अहं	अम्हे
द्वितीया	ममं	अम्हे
तृतीया	मए	अम्हेहि
चतुर्थी	मज्झ	अम्हाण / अम्हाणं
पंचमी	ममाओ	अम्हाहिंतो
षष्ठी	मज्झ	अम्हाण / अम्हाणं
सप्तमी	अम्हम्मि	अम्हेसु

16. **तुमं = तुम (सर्वनाम)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	तुमं	तुम्हे
द्वितीया	तुमं	तुम्हे
तृतीया	तुमए	तुम्हेहि
चतुर्थी	तुज्झ	तुम्हाण / तुम्हाणं
पंचमी	तुमाओ	तुम्हाहिंतो
षष्ठी	तुज्झ	तुम्हाण / तुम्हाणं
सप्तमी	तुम्हम्मि	तुम्हेसु

17. **इम = यह (पुंलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	इमो	इमे
द्वितीया	इमं	इमे
तृतीया	इमेण	इमेहि
चतुर्थी	इमस्स	इमाण/इमाणं
पंचमी	इमाओ	इमाहिंतो
षष्ठी	इमस्स	इमाण/इमाणं
सप्तमी	इमम्मि	इमेसु

18. **इम= यह (स्त्रीलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	इमा	इमाओ
द्वितीया	इमं	इमाओ
तृतीया	इमाए	इमाहि
चतुर्थी	इमाअ	इमाण/इमाणं
पंचमी	इमत्तो	इमाहिंतो
षष्ठी	इमाअ	इमाण/इमाणं
सप्तमी	इमाए	इमासु

19. **इम = यह (नपुंसकलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	इमं	इमाणि
द्वितीया	इमं	इमाणि
तृतीया	इमेण	इमेहि
चतुर्थी	इमस्स	इमाण/इमाणं
पंचमी	इमाओ	इमाहिंतो
षष्ठी	इमस्स	इमाण/इमाणं
सप्तमी	इमम्मि	इमेसु

20. **क= कौन (पुंलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	को	के
द्वितीया	कं	के
तृतीया	केण	केहि
चतुर्थी	कस्स	काण/काणं
पंचमी	काओ	काहिंतो
षष्ठी	कस्स	काण/काणं
सप्तमी	कम्मि	केसु

21. **क = कौन (स्त्रीलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	का	काओ
द्वितीया	कं	काओ
तृतीया	काए	काहि
चतुर्थी	काअ	काण/काणं
पंचमी	कत्तो	काहिंतो
षष्ठी	काअ	काण/काणं
सप्तमी	काए	कासु

22. **क = कौन (नपुंसकलिंग)**

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कं	काणि
द्वितीया	कं	काणि
तृतीया	केण	केहि
चतुर्थी	कस्स	काण/काणं
पंचमी	काओ	काहिंतो
षष्ठी	कस्स	काण/काणं
सप्तमी	कम्मि	केसु

क्रियापद रूप

1. **हस = हँसना (वर्तमान काल)**

	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	हसइ	हसंति
मध्यमपुरुष	हससि	हसह
उत्तमपुरुष	हसामि	हसामो

2. **हस = हँसना (भविष्यत्काल)**

	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	हसिहिइ	हसिहिंति
मध्यमपुरुष	हसिहिसि	हसिहिह
उत्तमपुरुष	हसिहिमि	हसिहिमो

3. **हस = हँसना (भूतकाल)**

	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	हसीअ	हसीअ
मध्यमपुरुष	हसीअ	हसीअ
उत्तमपुरुष	हसीअ	हसीअ

4. **हस = हँसना (विधि एवं आज्ञावाचक)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	हसउ	हसंतु
मध्यमपुरुष	हसहि	हसइ
उत्तमपुरुष	हसमु	हसमो

5. **ठा = ठहरना (वर्तमान काल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	ठाइ	ठंति
मध्यमपुरुष	ठासि	ठाह
उत्तमपुरुष	ठामि	ठामो

6. **ठा = ठहरना (भूतकाल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	ठाहीअ	ठाहीअ
मध्यमपुरुष	ठाहीअ	ठाहीअ
उत्तमपुरुष	ठाहीअ	ठाहीअ

7. **ठा = ठहरना (भविष्यत्काल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	ठाहिइ	ठाहिंति
मध्यमपुरुष	ठाहिसि	ठाहिह
उत्तमपुरुष	ठाहिमि	ठाहिमो

8. **ठा = ठहरना (विधि एवं आज्ञावाचक)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	ठाउ	ठंतु
मध्यमपुरुष	ठाहि	ठाह
उत्तमपुरुष	ठामु	ठामो

9. **हो = होना (वर्तमान काल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	होइ	होंति
मध्यमपुरुष	होसि	होह
उत्तमपुरुष	होमि	होमो

10. **हो = होना (भूतकाल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	होहीअ	होहीअ
मध्यमपुरुष	होहीअ	होहीअ
उत्तमपुरुष	होहीअ	होहीअ

11. **हो = होना (भविष्यत्काल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	होहिइ	होहिंति
मध्यमपुरुष	होहिसि	होहिह
उत्तमपुरुष	होहिमि	होहिमो

12. **हो = होना (विधि एवं आज्ञावाचक)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	होउ	होंतु
मध्यमपुरुष	होहि	होह
उत्तमपुरुष	होमु	होमो

विशेषण शब्दज्ञान

विशेषण शब्द (संज्ञा)

अप्प	–	थोड़ा, अल्प
जेट्ठ	–	ज्येष्ठ, बड़ा
पिअ	–	प्रिय
उच्च	–	ऊँचा
सेट्ठ	–	श्रेष्ठ
खुद्द	–	नीच

विशेषण शब्द (संख्या)

एग	–	एक
दोण्णि	–	दो
तिण्णि	–	तीन
चउरो	–	चार
पंच	–	पाँच
छ	–	छह
सत्त	–	सात
अट्ठ	–	आठ
णव	–	नौ
दह	–	दस

क्रियापद ज्ञान

क्रियापद ज्ञान (अकारान्त)

जण (सक.)	–	उत्पन्न करना
बंध (सकं.)	–	बांधना
धार (सक.)	–	धारण करना
मार (सक.)	–	मारना
वण्ण (सक.)	–	वर्णन करना
दरिस (सक.)	–	दिखलाना
तक्क (सक.)	–	तर्क करना
तिप्प (अक.)	–	संतुष्ट होना
पच (सक.)	–	पकाना
दूस (सक.)	–	दूषण लगाना
चिंत (सक.)	–	चिन्तन करना
भम (सक.)	–	घूमना, भ्रमण करना
सेव (सक.)	–	सेवा करना

क्रियापद ज्ञान (आ, ए, ओकारान्त)

दा (सक.)	–	देना
ठा (अक.)	–	ठहरना
ण्हा (अक.)	–	नहाना
खा (सक.)	–	खाना
गा (सक.)	–	गाना
पा (सक.)	–	पीना
झा (सक.)	–	ध्यान करना
णे (सक.)	–	ले जाना
हो (अक.)	–	होना

विविध क्रियाविशेषण अव्यय

उत्तरओ	=	उत्तर से
पुह/पिहं	=	अलग
ईसीं/ईसिं/ईसि	=	थोड़ा
मणयं	=	थोड़ा
किंचि	=	थोड़ा
अवसं	=	अवश्य
अहवा	=	अथवा
अलं	=	बस, पर्याप्त
सयं	=	स्वयं
अओ	=	इसलिए/इस कारण से
सह/सद्धिं/समं	=	साथ
समयं/समं	=	साथ
समया	=	समीप
मुहा	=	व्यर्थ
विणा	=	बिना
णवरं/णवर	=	केवल
णवरि	=	बाद में
सहसा/सहसत्ति	=	एकदम
एव	=	ही
जइ	=	यदि
णूण/णूणं	=	निश्चय
जओ	=	क्योंकि/जिससे
णाणा	=	अनेक
तं जहा	=	उदाहरणार्थ
खलु	=	निश्चयपूर्वक
जं	=	क्योंकि
णो/ण/णवि	=	नहीं
तओ/ततो/ततो	=	इसके पश्चात्
तए	=	तत्पश्चात्
तीअं	=	अतीत
परं	=	परन्तु
परोप्परं/परुप्परं	=	परस्पर में/आपस में
पुणरवि	=	फिर
जेण	=	जिससे
अतीव	=	बहुत
किण्णं	=	क्यों
किणो	=	क्यों, किसलिए
सइ	=	एकबार
सया	=	सदा
पुण	=	फिर
असइ/असइं/ असई	=	बार-बार/अनेक बार
पुण-पुण	=	बार-बार/फिर-फिर
मुहु/मुहुं	=	बार-बार
एयहुत्तं	=	एक बार
सुहं	=	सुखपूर्वक
दुहं	=	दुखःपूर्वक
णेहेण	=	स्नेहपूर्वक
स्ववायरेण	=	पूर्ण आदरपूर्वक

राशियों के अनुसार प्राकृत नामावली

बालकों के नाम

मेष राशि (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

अक्खर	अरविंद	अणुओग	अत्थ	लोएस	अमुल्ल
अक्खय	अच्चुद	अभिसेय	आरण	लोयवाल	आयार
अरुह	अमोह	अमुत्त	आणंद	लसिद	आकस्स
अजिद	आइच्च	अणिमेस	अभि	अरुण	चेयण
लोइय	लोगेस	आउस	अमोघ	आमोद	आरोग्ग
अभिणंद	अरहंत	अरिंदम	अणल	अकंप	चेदण

वृष राशि (इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

उसह	विसेरू	विदिस	उदय	वीर	ऐरावय
उवाय	उक्कस्स	वेंजण	विसुद्ध	विउल	

मिथुन राशि (का, की, कू, घ, ड़, छ, के, को, हा)

हरिस	हरेस	हरिम	कुमुद	हरी	हरिद
हणी	हारदिग	कात्तिग	करुण	केतन	कोमल
कुस	कुणाल	कमल	कवीस	कोसिक	कामिद

कर्क राशि (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

हीमंत	हेमंत	हेमराज	हीरग	हीरा	हिरिंद
हितेंद	हिमेस	हेमंक			

सिंह राशि (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

मंजुल	महंत	मंगल	मोगली	मोलिक	मेहुल
टीकम	टेकचंद	मलय	मदण	महुर	महेस
महीप	महिम	महावीर	मिहिर	माणिक	मयंक
मानस	मानव	मणीस	मेहल	मोहक	मोहन
मोहित	मोहल				

कन्या राशि (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

पवण	पीऊस	पबोह	पाणद	पावन	पवयण
पहाव	पव्वय	पुलग	पसीद	पमोद	पूसित
पलास	परेस	पसण्ण	पंकज	पसिद्ध	पीदम
पवीण	पव्व	पहिग	परम	पंकज	पूरक

तुला राशि (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

रिसी	रवि	तेउ	रयण	रूवी	

वृश्चिक राशि (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

तोसित	तोताराम	तोलित	तोय	तोणिस	तोरण
तोस	तोसण	तोयद	यमण	यक्ष	

धनु राशि (ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

भासिद	भावग	भदंत	भाणु	भव्व	भरदेस
भरय	भावय	भाविग	भव	भावेस	भामंडल
भूसण	भुवन				

मकर राशि (भो, जा, जी, जु, जे, जो, ख, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

जसोहर	खुसाल	जीवग	जोग्ग	जिविंद	जस
भोम	जसवाल	जुग	जीवंधर	जय	जितिंद
जितेंद	जोगिंदर	जलज	जलेस	जंबू	

कुंभ राशि (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

समण	संभव	सुरिंद	सुहयर	संखेव	सोहम्म
सुधम्म	सामिय	सारद	सूरिय	संदेस	कुंथु
सुह	सुहग	संगम	समय	सहाव	सूरी
सिद्ध	सुधाम	सरण	सोम	सासणु	समद
सुभग	सरद	सोमिल	सयल	सुद	सामंत

मीन राशि (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

चरित्त	चिंतण	दीवग	दीव	देसक	देसित
दीवेस	चिंमय	चंदण	चंद	चिरायु	चिराग

बालिकाओं के नाम

मेष राशि (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

अणिमा	अरिहा	लघिमा	अप्पणा	चेयणा	अरोसा
आवली	अमंदा	आराहणा	अरोसा	आमुसी	अकोला

वृष राशि (इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

उदया	उमा	वंसिगा	वंसिया	उजुमदी	इड्ठी
बोहिणी	ऐरा	ऐसरा	विउला	वंसा	ओमी
ओमिणी	एगदा	इंदु	विणीदा	विसोही	एयदा
उम्मुहा	उज्जुला	ओसी			

मिथुन राशि (का, की, कू, घ, ड़, छ, के, को, हा)

कप्पणा	केली	कविया	कप्पिया	कित्ती	कामिणी
हणी	हरिसा				

कर्क राशि (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

हीमंती	हिणा	डाली	हेमा	हिमांगी	हिमाणी

सिंह राशि (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

मेत्ती	मोहिणी	मोली	महिमा	मेहा	मेदिणी
मणी	मेहला	मही	मणुय	डाली	मंजुला
टीना	माही	टीनू	मल्लिका		

कन्या राशि (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

पूजा	पीदी	पिऊ	पमुहा	पसुहा	पाली
पमोदिणी	पीई	पुण्णा	पउमा	पलग	

तुला राशि (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

रूवी	रिद्धि	रागिणी	तारिगा	रयणी	

वृश्चिक राशि (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

तोसिता	तोसी	तोसिमा	तोसा	तोसाणी	तोया
तोयदा	युवई				

धनु राशि (ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

भावणा	भत्ति	भाविणी	भारदी	धम्मा	भामा
भारवी	भामिणी	योगिदा			

मकर राशि(भो, जा, जी, जु, जे, जो, ख, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

गरिमा	जसवंती	खुसी	जोइणी	गणणा	जसा

कुंभ राशि (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

समिदी	सोहणी	सोमाली	सिरिमंती	सुलेहा	सिम्पी
सिद्धी	सोहाणी	सुकेसी	सुबोह	सुही	सिदी
सुहाणी	सुमणा	गोमदी	सीयला	सोहणा	सुहाली
सुदा	समंदा	सेमुसी	सामिली	सुमुहा	सणेहा
ससी	सादी	सुघोसा	सासणी	सुतारा	साहिणी
सुणंदा	सोमिला	गोवी	सुद्धा	सेफाली	सुफला

मीन राशि (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

चारू	चरिया	चंदा	चरिमा	दिसा	देसणा

‘जेण्हं जयउ सासणं’

पाइयभासा पसारट्ठं उवाया

(प्राकृत भाषा प्रचार के उपाय)

णवपाठसालाए णामं ‘पाइयविज्जापाठसाला’ इदि रक्खेदव्वा।
नई पाठशाला का नाम ‘प्राकृत विद्या पाठशाला’ रखना चाहिए।

पुव्वसंचालिद-पाठसालाए पाइयविज्जापाठकम्मो पढावेदव्वो।
पहले से संचालित पाठशाला में प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम पढ़ाना चाहिए।

सुदपंचमीदिवसो पाइयभासादिवसरूवेण करिदव्वो।
श्रुतपंचमी दिन को प्राकृतभाषा दिवस के रूप में करना चाहिए।

पाइयभासाए परोप्परं वत्तालावो कादव्वो।
प्राकृत भाषा में परस्पर वार्तालाप करना चाहिए।

वरिसे एगदिणं पाइयभासाए मंचणं अवस्सं कादव्वं।
वर्ष में एक दिन प्राकृत भाषा में मंचन अवश्य करना चाहिए।

पाइयभासाए पुत्तगिहादीणं णामं रक्खिदव्वं।
प्राकृत भाषा में पुत्र, घर आदि का नाम रखना चाहिए।

पाइयभासाए णामोच्चारणं कादव्वं।
प्राकृत भाषा में नामोच्चार करना चाहिए।

पाठसालाए पाइयभासाए सुभासिदं पट्टे रचावेदव्वं।
पाठशाला में प्राकृत भाषा में सुभाषित पट्ट (बोर्ड) पर लिखना चाहिए।

जिणागमस्स मूलभासा पाइयभासा अत्थि तेण पाइयभासाए रक्खणेण जिणागमस्स रक्खा कादव्वा।
जिनागम की मूलभाषा प्राकृत भाषा है इसलिए प्राकृतभाषा की रक्षा से जिनागम की रक्षा करना चाहिए।

पत्राचार माध्यम

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा
(प्राकृत शिक्षा)

भाग - 4

लेखक
मुनि प्रणम्यसागर

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा
(प्राकृत शिक्षा)

भाग - 3

लेखक
मुनि प्रणम्यसागर

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा
(प्राकृत शिक्षा)

भाग - 2

लेखक
मुनि प्रणम्यसागर

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा
(प्राकृत शिक्षा)

भाग - 1

लेखक
मुनि प्रणम्यसागर

आओ पढ़ाएं...
सबको बढ़ाएं

प्रकाशक :
आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति
देवास रोड, उज्जैन (476010)



978-81-934860-2-3